RNI NO. DELHIN/2017/74159

ISSN 2581-8856

साहित्य, कला-संस्कृति का त्रैमासिक संचयन

11 सृजन सरोकार

वर्ष 3 | अंक 3-4 (संयुक्तांक) | अप्रैल-सितम्बर 2020

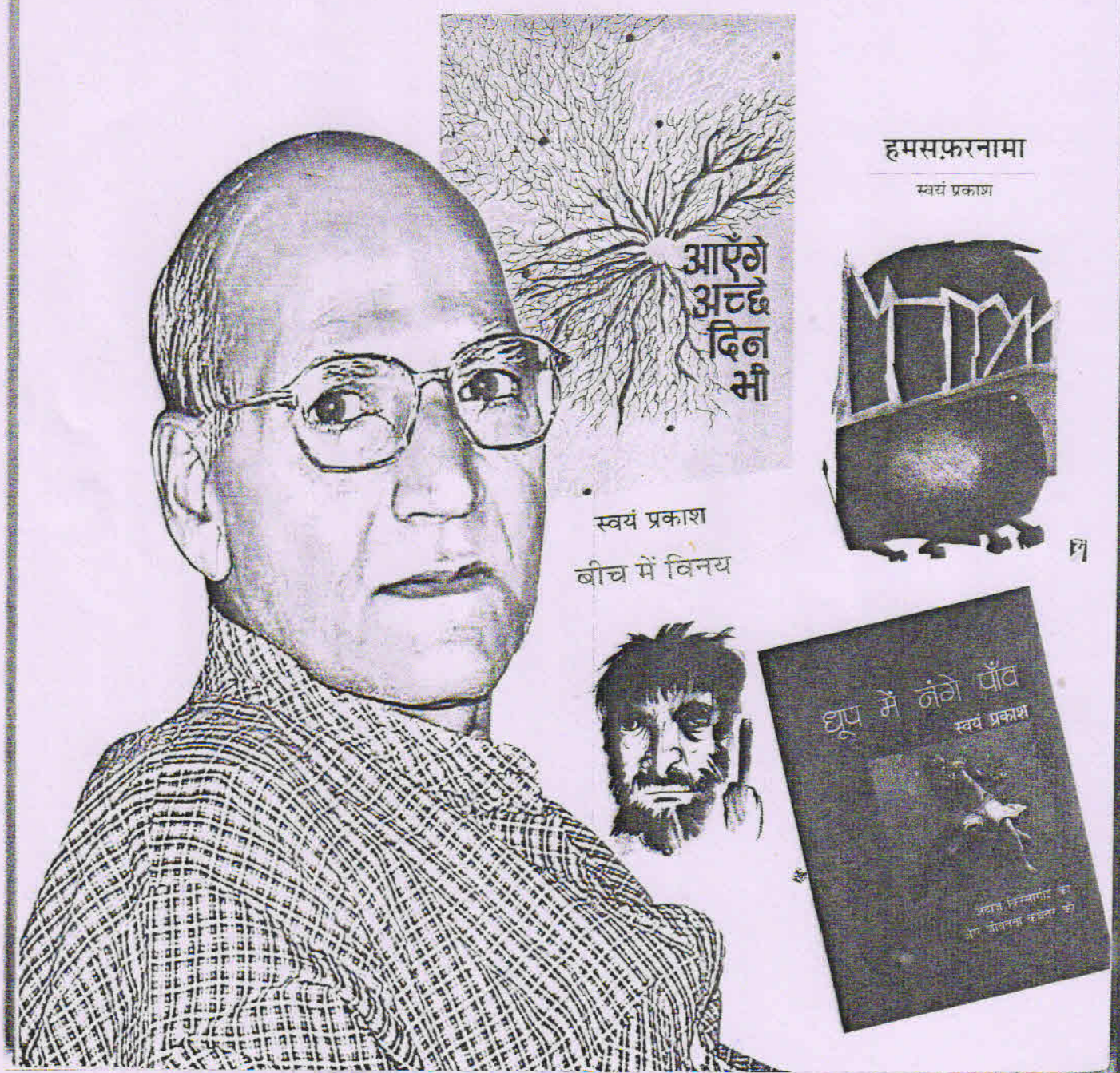

ISSN 2581-8856

साहित्य, कला-संस्कृति का त्रैमासिक संचयन

सृजन सरोकार

वर्ष 3 | अंक 3-4 (संयुक्तांक) | अप्रैल–सितंबर 2020

त

जर

प्रधान संपादक
गोपाल रंजन

कार्यालय
G.H.-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स,
लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110063

IVE LIMITED
INDIA
p

क संचयन

कार

–सितंबर 2020

ंट के सामने,

156 46898

क)

क)

ाने हेतु एक वर्ष का

age पर भी उपलब्ध

नखित खाते में भेजें

k Ltd., New Delhi

6

लीमाराग,

सामने, पश्चिम विहार,

अपने है। इससे संपादक की

तहत जिम्मेदार

अनुक्रम

अपनी बात

सफ़र के कठिन कोस ____ 4

विशेष : स्वयं प्रकाश

समय के शिल्पकार की खेतीबारी–भरत प्रसाद ____ 5

क्या तुमने कभी कोई सरदार भिखारी देखा कुछ प्रश्न, कुछ विचार –सेवाराम त्रिपाठी ____ 8

गुमनामी में जीते रूपांतरणकारी समूह –बली सिंह ____ 12

सादगी, सुरुचिता और वैचारिकता की मानवीय गरिमा–नीरज खरे ____ 17

जीवन सत्य के कथाकार : स्वयं प्रकाश –पल्लव ____ 24

बीच बहस में विनय : काबा मेरे पीछे है कलीसा मेरे आगे–डॉ. रेणु व्यास ____ 31

साम्प्रदायिक मानसिकता के विरुद्ध संवेदना का मानवीय और लोकतांत्रिक प्रतिपक्ष (संदर्भ : 'पार्टीशन')–रामबचन यादव ____ 39

सामाजिक जीवन के विभिन्न आयाम –देवी कृष्णा पी ____ 43

मूल्यांकन

चंद हसीन खुतूत–रेणु व्यास ____ 45

धूप में नंगे पाँव : कथेतर के कथा-प्राकट्य –मलय पानेरी ____ 49

स्मृति शेष

प्रोफ़ेसर सैयद अक़ील रिज़वी : कुछ यादें-कुछ बातें –अली अहमद फ़ातमी ____ 52

खगेन्द्र ठाकुर : सृजन और कर्म की सहज सज्जनता–कुमार वीरेन्द्र ____ 60

स। तरी कहानी और गंगा प्रसाद विमल –सरोज सिंह ____ 66

कहानी

प्रवचन–जयप्रकाश कर्दम ____ 72

नीलकंठ–सोनी पाण्डेय ____ 78

लघु कथा

अब और नहीं–शांभवी इस्मारिका ____ 81

कविताएं

हरीश चन्द्र पाण्डे–फेफड़ों के लिए/यहाँ हैं घोड़े/ तत्सम बनाम ..... ____ 83

जितेन्द्र श्रीवास्तव–कोरोना और जीवन का हाइवे/ कल रात नींद नहीं आई मुझको–/ पूरा का पूरा जीवन/अक्षरों की नाव से ____ 84

शैलेय–जाले/विचार/संभावनाएं/वरदान/छुटकी ____ 86

सुभाष राय–जड़ें/बाग पसंद है/बाग माने बगावत/ लोग बागों में आ गए हैं/जुलूस में बदलती औरतें/ पुत्र भी, शिष्य भी ____ 87

अरुण शीतांश–रोटी/प्रिया प्रकाश...../ धीरे से सोचते हुए ____ 89

डॉ. कर्मानंद आर्य–प्रतिमान/अंतिम अरण्य/वसंतसेना/ जनरल डायर/घायल देश के सिपाही ____ 91

रंजना शर्मा–अब एक शून्य है/यह कौन है/ हर मोड़ कविता है/समय नदी ____ 93

राकेश मिश्र–मां/शब्द/दाढ़ी/झूठ था/सांप-1/ सांप-2/भाव/प्रेम में ____ 96

ऋतु त्यागी–ना जी ना/प्रेम और मैं/ पिता की पीठ/सिसकती रातें ____ 98

अनिता रश्मि–छक्का/पिता/हम/चेहरे ____ 99

रिपोर्ट

यह कोरोना नहीं, करुणा काल है–डॉ. कुमार वीरेंद्र –डॉ. अविनाश कुमार सिंह ____ 102

कला प्रदर्शन का वैकल्पिक माध्यम –उमेश भाटिया ____ 103

गुमनामी में जीते रूपांतरणकारी समूह

बली सिंह

जन्म : 1 जनवरी, 1961 दिल्ली के राजपुर गांव में।
शिक्षा : दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए., एम.फिल. और पी-एच.डी.
सृजन : आस्था की कविताएं (संयुक्त कविता-संग्रह), अष्टाक्षरा (संयुक्त कविता-संग्रह), नवजागरण और आचार्य रामचंद्र शुक्ल (आलोचना), कविता की समकालीनता (आलोचना), अभी बाकी है (कविता-संग्रह)।
सम्प्रति : प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

संसार भर में अनेक तरह के समूह समाज के रूपांतरण में सक्रिय रहे हैं, और आज भी सक्रिय हैं। हमारा देश भी इसका अपवाद नहीं है। यहां भी छोटे-बड़े समूह समाज को बदलने का अथक प्रयास करते रहे हैं। कोई समूह समाज-सुधार को लेकर चला है, उसकी बुराइयों-कुरीतियों, उसमें पाए जाने वाले भेदभावों और अंधविश्वासों के विरूद्ध संघर्ष करते हुए ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा और लोगों की चेतना को बढ़ाने में लगा रहा है और आज भी लगा हुआ है। कोई समूह राजनीतिक विधान या सत्ता-विमर्ष को केन्द्रित करके चला है, वह दल, जन संगठन, ट्रेड यूनियन इत्यादि के जरिए लोगों के हक की लड़ाई लड़ रहा है। कोई लोगों के जीवन स्तर को उठाने की कोशिश कर रहा है जिसमें कि उन्हें समाज में जगह और पहचान मिल सके। और कोई समूह ऐसा भी है जो समाज-व्यवस्था के रूपांतरण में अधिक सक्रिय रहा है, नाम, रूप और जगह भले ही बदल जाए पर उसकी सक्रियता अभी भी जारी है। रचनाकार ऐसे समूहों को अपनी रचना का हिस्सा बनाते रहे हैं।

स्वयं प्रकाश का उपन्यास 'ज्योतिरथ के सारथी' ऐसे ही एक रूपांतरणकारी समूह पर केन्द्रित है। इसका मुख्य पात्र सुधीश है। वह इंदौर के क्रिश्चियन कॉलेज में बी.एस-सी. का छात्र है, वहीं उसे कुछ मित्र मिलते हैं- किरीट, मेहता, अन्तू और कर्णिक। कर्णिक का फक्कड़पन उसे अच्छा लगता है। यूं तो "सुधीश, मेहता, अन्तू अपने-अपने मोहल्लों में लाइब्रेरियां चलाते थे। बच्चों के कहानी-किस्से। शहीदों की जीवनियां। सौरमंडल संबंधी प्रारंभिक वैज्ञानिक जानकारियां। स्कूल के होमवर्क में सहायता। हाईजीन। शिष्टाचार!" (ज्योतिरथ के सारथी, पृ. 14) समाज के विकास में यह कार्य सहायक जरूर बनता है लेकिन उसके रूपांतरण में यह नाकाफी है, क्योंकि इसके जरिए जिन मूल्यों का प्रचार-प्रसार होता है जैसे दया, क्षमा, सहानुभूति, और करुणा, उसका फायदा तो सत्ता पर काबिज और अधिकांश संसाधनों को हथियाए हुए लोग उठा रहे हैं- "सो-कॉल्ड इन्डस्ट्रिलिस्ट"। (वही)। कर्णिक इस पहलू को सुधीश के सामने रखता है और समाज की संरचना को सही ढंग से समझने के लिए अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, दर्शन की किताबें

पढ़ने को दे
झुग्गी-झोंपडि
गिरदी पहलवा
भारत की स्वा
धारा से रहा है
अंग्रेज पुलिस
और नागसेन
थे। स्वतंत्रता
ने उन्हें क्रांति
नेशनल सोशलि
आखिर जब
बाद पार्टी में
हो गए। फिर
की हार से दु
नागसेन कहला
खान था। वे व
में एक छापाख
को संगठित क
चिपका दिया,
उनके मित्र डा.
में सहयोग कर
से जुड़े हुए हैं,
गया है। कर्णिक
जिसे डा. सत्या
के बाद सुधीश
जाता है जहां उ
आगे चलकर
इकबाल भी मि

यह समूह
से जुड़े हैं और
संघर्ष चला रहे
मूल्यों को चरित
उसे गुमनामी में
व्यवस्था के ऐसे
सहना पड़ता है
और भाईचारे को
जन-आक्रोश को
कराकर अपना
व दमन की अम